देखी बनवारी चंचल भारी तदपि तपोधन मानी।
अति तपमय लेखी गृहथित पेखी जगत दिगम्बर जानी।
जग यदपि दिगम्बर पुष्पवती नर निरखि निरखि मन मोहै।
पुनि पुष्पवती तन अति अति पावन गर्भ सहित सब सोहै ॥34।

शब्दार्थ—(बाटिका के पक्ष में)—बनवारी = वाटिका। चंचल = मस्त वायु से झूमती हुई। तपोधन = जाड़ा, गर्मी, वर्षा आदि सहन करने वाली। गृहथित = चारदीवारी से घिरी हुई। दिगम्बर = नंगी हुई। पुष्पवती = फूलों से लदी हुई। पावन = सुन्दर। गर्भसहित = परागयुक्त।

वनकन्या के पक्ष में—बनवारी = वनकन्या। चंचल = चंचल स्वभाव वाली। तपोधन = तपस्विनी। गृहथित = गृह-स्थित, घर में रहते हुए। दिगम्बर = वस्त्रहीन, नंगी। पुष्पवती = रजोधर्म से युक्त। पावन = पवित्र।

प्रसंग—इस छंद में कवि ने राजा दशरथ की वाटिका का वर्णन किया है। साथ ही श्लिष्ट शब्दों से किसी वन-कन्या का वर्णन भी किया गया है।

व्याख्या—**वाटिका के पक्ष में**—महर्षि विश्वामित्र ने राजा दशरथ की वाटिका देखी जो यद्यपि मस्त वायु से झूमती हुई अचंचल बन रही थी, तथापि वह तपस्वियों की तरह जाड़ा, गर्मी, वर्षा आदि ऋतुओं को सहन करने वाली थी। वह चारदीवारी से युक्त थी। संसार के लिए वह खुली हुई थी; अर्थात् कोई भी व्यक्ति उसमें भ्रमण करके उसके सौन्दर्य को देख सकता है। वह वाटिका यद्यपि संसार के लिए खुली हुई थी तथापि विविध भाँति के पुष्पों से लदी हुई थी जिसकी शोभा को देख-देखकर मनुष्यों के मन मोहित हो जाते थे। फूलों से लदी हुई होने के कारण वह वाटिका अत्यन्त सुन्दर थी और परागयुक्त होकर शोभायमान थी; अर्थात् बीजांकुर-सहित वृक्ष शोभा पा रहे थे।

(वनकन्या के पक्ष में)—महर्षि विश्वामित्र ने राजा दशरथ की वाटिका के रूप में किसी वनकन्या को देखा जो यद्यपि अत्यन्त चंचल स्वभाव की थी तथापि तपस्वियों का-सा संयमपूर्ण मान रखती थी—इस कथन में विरोध यह है कि जो नारी चंचल होगी वह संयमी नहीं हो सकती। तप से युक्त होने पर भी वह अपने घर में स्थित थी। संसार उसे नंगी जानता था; अर्थात् वह सभी के सामने नंगी रहती थी यद्यपि संसार के सामने छोटी-छोटी बालिकाएँ नंगी रह सकती हैं किन्तु वह तो रजोधर्म से युक्त थी; अर्थात् पूर्ण युवती थी। मनुष्यों को देख-देखकर वह उन पर मोहित हो जाती थी। वह वनकन्या रजोधर्म से युक्त होने पर भी अत्यन्त पवित्र थी और गर्भ-सहित शोभायमान थी।

वनकन्या के पक्ष में जो अर्थ निकलता है वह विरोधों से युक्त है। जैसे—वनकन्या को चंचल बताकर भी उसे तपस्वी-जैसा संयमी बताया है। जो नारी चंचल होगी, वह संयमी नहीं हो सकती। वह तपमय होने पर भी अपने घर में रहती है—जिस नारी में वैराग्य की भावना आ जायेगी वह अपने घर में—सांसारिक कार्यों में अनुरक्त नहीं रह सकती। वह पुष्पवती होने पर भी नंगी रहती है—युक्ती होने पर भी वस्त्रहीन रहना वस्तुतः विरोध है। रजोधर्म से युक्त होकर भी पवित्र है और गर्भवती होने पर भी शोभा से सम्पन्न है। ये सभी बातें विरोधों से भरी हुई हैं।

विशेष—इन छन्द में कवि की चमत्कारिक प्रवृत्ति की प्रधानता के कारण भावपक्ष को बहुत ठेस लगी है।

अलंकार—श्लेष, विरोधाभास।